पाठशाला भीतर और बाहर के 25 अंकों का सफ़र

गुरबचन सिंह

पाठशाला भीतर और बाहर पत्रिका का यह 25वाँ अंक है। ज़ाहिर है इस सफ़र में सबसे बड़ी भागीदारी इसके पाठकों की, लेखकों की रही है। आज जब यह बात ख़ूब सुनने में आ रही है कि पढ़ने-लिखने की संस्कृति लगातार सिमटती जा रही है, ऐसे में एक अकादमिक पत्रिका का यह सफ़र सच में सुखद है।

पलटकर देखता हूँ तो पहले अंक के प्रकाशित होने से पहले का विचार-विमर्श याद आता है जब पत्रिका के औचित्य से लेकर उद्देश्य तक पर गहन विमर्श हुआ।

पाठशाला भीतर और बाहर के सफ़र की शुरुआत जुलाई 2018 में हुई थी। उद्देश्य था कि यह पत्रिका विद्यालय के शिक्षकों, शिक्षक-शिक्षा से जुड़े और शिक्षा में रुचि रखने वालों के लिए गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक सन्दर्भ सामग्री मुहैया कराएगी। साथ ही, शिक्षा में कार्य करने व इससे सरोकार रखने वाले व्यक्तियों और संस्थाओं के लिए विमर्श का एक मंच बनेगी जहाँ वे अपने शैक्षिक अनुभव साझा कर सकेंगे। इससे शिक्षा पर होने वाले विमर्श और संवाद को गहन एवं वास्तविक बनाया जा सकेगा। शिक्षा के क्षेत्र में काम करने वालों के बीच पढ़ने-लिखने की संस्कृति को बढ़ावा देना इसके व्यापक उद्देश्यों में शामिल रहा है।

शुरुआत में तय किया कि पत्रिका अर्धवार्षिक होगी। इस तरह पहले 4 अंक छमाही निकाले गए। इन चार अंकों में विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न विषयों पर लेख प्रकाशित हुए। इनमें एक ओर जहाँ शोधपरक, सैद्धान्तिक और प्रैक्टिस से जुड़े अनुभव-आधारित लेखों को शामिल किया गया, वहीं दूसरी ओर भाषा, गणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन, आदि विषयों के अध्यापन से जुड़े लेख सम्मिलित किए गए।

बदलाव सफ़र का हिस्सा रहा

चार अंकों के प्रकाशन के बाद पाठकों से पत्रिका और इसके लेखों के बारे में राय ली गई।

राय पर मन्थन हुआ, और पत्रिका में छपने वाले लेखों की प्रकृति, स्वरूप व प्रस्तुति में कुछ परिवर्तन किए गए। इसकी पृष्ठ संख्या कम की गई, और आवृत्ति बढ़ाई गई। अब पत्रिका 200 के बजाय 100 पृष्ठ की बनकर तिमाही छपने लगी। साल में चार अंक। लेखों की शब्द सीमा को कम करते हुए इन्हें भाषा की दृष्टि से ज़्यादा सरल और पठनीय बनाने के प्रयास किए गए। इसे ज़्यादा उपयोगी बनाने के उद्देश्य से सम्पादकीय समूह में ऐसे साथियों को शामिल किया गया जिनका फ़ील्ड, यानी विद्यालयों से सीधा जुड़ाव था।

पत्रिका में अब प्रारम्भिक शिक्षा के विविध विषयों पर मननशील व समालोचक दृष्टिकोण से लिखे गए विश्लेषणात्मक लेख प्रकाशित किए गए। इसमें सैद्धान्तिक व यथार्थपरक अनुभवों पर आधारित सामग्री के बीच सन्तुलन बनाते हुए ऐसे लेख शामिल हुए जिन्हें हमारे शिक्षक स्पष्टता व आसानी से समझ सकें, अपनी कक्षा में अधिक-से-अधिक उपयोग कर सकें ताकि कक्षा प्रक्रिया में सकारात्मक बदलाव दिखे।

प्रयास यह भी किया गया कि पत्रिका ज़मीनी स्तर पर काम कर रहे शिक्षकों व शिक्षा से जुड़े लोगों को अपने अनुभव दर्ज करने, और उनको विस्तार व गहराई देने के अवसर उपलब्ध कराए। यह शिक्षकों और शिक्षक प्रशिक्षकों के दक्षता संवर्धन के लिए एक ज़रिया बने। वे पढ़ें, और मिलकर संवाद करें।

पाठशाला के लेखों में पाठ्यचर्या क्षेत्र भाषा, गणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन, कला शिक्षा, आदि विषयों से सम्बन्धित सामग्री शामिल है। इन विषयों के परिप्रेक्ष्य, सिद्धान्त, उद्देश्य, और सीखने-सिखाने के तरीक़ों व इनसे मिले ठोस अनुभवों पर आधारित लेख प्रकाशित किए जा रहे हैं। आज के सन्दर्भ में बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान, प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा, शिक्षकों के पेशेवर विकास

से सम्बन्धित लेख प्राथमिकताओं में शामिल हैं। भाषा शिक्षण से जुड़े पहलू, जैसे रचनात्मक लेखन, शिक्षक डायरी, दीवार पत्रिका, बहुभाषिकता, प्रिंट-रिच वातावरण, आदि भी पत्रिका की विषयवस्तु का हिस्सा हैं।

इस दौर में आकलन व परीक्षाएँ, माध्यम के रूप में स्थानीय व मातृभाषा, संवैधानिक मूल्यों जैसे समावेशन, बन्धुता, समानता, जेंडर, और विज्ञान तथा वैज्ञानिक सोच, गणितीय सोच, इबारती सवाल जैसे प्रकरणों पर सारगर्भित विषयवस्तु प्रकाशित हुई है। विद्यालयों और फ़ील्ड में चलने वाली गतिविधियों, जैसे समर कैम्प, बाल सभा, बाल शोध मेला, मॉर्निंग असेम्बली, वालंटरी टीचर फ़ोरम, शैक्षिक भ्रमण, आदि पर भी लेख प्रकाशित हुए हैं।

पाठशाला का पाठकों से जुड़ाव और उपयोग

समय-समय पर फ़ील्ड के साथियों और शिक्षकों से चर्चा के दौरान पहली समझ तो यही बनी कि यदि पढ़ी जाने वाली सामग्री और लेख पाठकों, शिक्षकों और सन्दर्भ व्यक्तियों के काम से जुड़े हों, वे ज़रूर पढ़े जाते हैं, और बहुरूप उपयोग में लाए जाते हैं। ये लेख शिक्षक तो पढ़ ही रहे हैं, इनका उपयोग कार्यशालाओं व शिक्षकों के स्वैच्छिक समूहों में भी हो रहा है। लेखों पर चर्चा होना, उनसे जुड़े अपने अनुभवों को साझा करना, लेख पढ़ने के बाद शिक्षण प्रक्रिया में आए बदलाव, आदि के बारे में साझेदारी इस बातचीत का हिस्सा बनी।

फ़ील्ड के साथियों और शिक्षकों ने बताया कि संस्थाओं द्वारा आयोजित होने वाली विषय-आधारित कार्यशालाओं में *पाठशाला* के लेखों का उपयोग पढ़ने व संवाद के ज़रिए समझ बनाने के लिए किया जाता है। इससे उनकी सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं में सुधार आता है। इनकी झलकियाँ हमें 'पाठक चश्मा', जो अब 'सम्पादक के नाम' स्तम्भ है, में पाठकों द्वारा साझा की गई टिप्पणियों में दिखाई देती हैं।

मिसाल के तौर पर, 'पुस्तकालय विशेषांक' पढ़कर प्राइमरी स्कूल चंगोराभाटा पश्चिम, रायपुर, छत्तीसगढ़ की शिक्षिका बरखा शर्मा ने लिखा–

> *"मेरे मन में विचार आया कि मैं ज़्यादा-से-ज़्यादा विद्यार्थियों में पढ़ने की रुचि जाग्रत करने, और उन्हें पुस्तकों से जोड़ने के लिए अपने स्कूल के मुस्कान पुस्तकालय को खोलूँ, अलमारी में बन्द किताबों को सामने लाऊँ, और उनका नियमित उपयोग करने का अवसर विद्यार्थियों को दूँ। विद्यार्थियों में पढ़ने-लिखने की रुचि विकसित करने के लिए मैं अपनी कक्षा में पुस्तकालय का एक पीरियड भी तय करूँगी।"* अंक 20

इसी तरह, 'समावेशी शिक्षा विशेषांक' से पाठकों को समावेशन के बारे में गहरी समझ बनाने का एक सही नज़रिया मिला। उन्होंने अलग-अलग पृष्ठभूमि वाले वंचित समुदाय के विद्यार्थियों में बहिष्करण के बारीक़ रूपों को गहराई से समझा। वे संवेदना व मानवीय गरिमा के साथ बहिष्कृत विद्यार्थियों को समावेशित करने के लिए व्यावहारिक उपायों को समझ पाए, और इन्हें आस-पास व कक्षा अनुभवों से जोड़कर देख पाए।

पाठकों के 'सम्पादक के नाम' स्तम्भ में व्यक्त विचार समावेशी शिक्षा विशेषांक की अहमियत को दर्शाते हैं–

> *"आलेख 'लड़कियों में माहवारी और उसका सीखने से सम्बन्ध' पढ़ने से समझ आया कि समावेशन को हम अत्यन्त विशेष परिस्थितियों वाले विद्यार्थियों के सन्दर्भ में ही देखते रह जाते हैं, जबकि एक बड़ा सामान्य समझा जाने वाला समूह भी कुछ अलग तरह की चुनौतियों से जूझ रहा होता है। इनका समाधान किए बग़ैर समावेशन की बात अधूरी रहेगी।"* अनिल सिंह, टीचर एजुकेटर, भोपाल, मध्य प्रदेश, अंक 23

> *"समावेशी शिक्षा विशेषांक समावेशन पर समग्रता में सोचने को बाध्य करता है। 'केवल नामांकन के स्तर पर समावेशन पर्याप्त नहीं' और 'सीखने पर हक़ तो सबका बराबर है' सारगर्भित लगे।"* रानी कुमारी, शिक्षिका, दरभंगा, बिहार, अंक 23

पाठशाला के कई लेखों पर पाठकों की बहुत सारी समीक्षात्मक विवेचनाएँ मिलती हैं। ये विवेचनाएँ पत्रिका के प्रति पाठकों के लगाव व इसकी उपयोगिता को दर्शाती हैं। साथ ही, इनसे सम्पादकीय टीम को यह समझने में मदद मिलती है कि पाठक किन विषयों पर किस तरह की विषयवस्तु चाहते हैं। यहाँ कुछ दृष्टान्त प्रस्तुत हैं–

> *"मैं स्कूल शिक्षिका नहीं हूँ फिर भी* पाठशाला *के सभी आलेखों को लगातार पढ़ती हूँ। यह पत्रिका पाठकों को ऐसे लेख प्रदान नहीं करती है जिनको केवल पढ़ा जाए, अपितु यह अपने पाठकों को नया नज़रिया देती है जिससे वे चीज़ों को अलग दृष्टिकोण से देख सकें, और स्कूल में विद्यार्थियों को पढ़ाने जैसे ज़िम्मेदारी के कार्य को करने वाले लोग अपने कार्य को और बेहतर तरीक़े से कर सकें।"* तृप्ति यादव, आँगनवाड़ी शिक्षिका, सागर, मध्य प्रदेश, अंक 19

> *"लेख 'मैडम, मेरा जवाब सही है!' पढ़कर मेरा नज़रिया एक शिक्षक होने के नाते बदला है। इसे पढ़कर समझ आया कि सवाल पूछना सीखने-सिखाने और ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया का स्वाभाविक व अहम हिस्सा है। कक्षा में इसकी जगह होनी ही चाहिए। हमें विद्यार्थियों की जिज्ञासाओं के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता है।"* विष्णु कुमार, प्रधानाध्यापक, जयपुर, राजस्थान, अंक 12

> *"मैं* पाठशाला *की नियमित पाठिका हूँ। विद्यार्थियों के साथ शिक्षण कार्य करवाते हुए आने वाली परेशानियों में यह पत्रिका हमें काफ़ी रास्ते सुझाती है।"* प्रमिला भाटी, शिक्षिका, जयपुर, राजस्थान, अंक 16

> *"आलेख 'पढ़ना, अक्षर-मात्रा से आगे' में पढ़ने के कौशल का महत्त्व बड़ी सहजता से ऐसे दर्शाया गया है, मानो हमारी कक्षा की बातों का ही सजीव चित्रण हो रहा हो।"* आरती बहुगुणा, शिक्षिका, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड, अंक 16

शिक्षा में व्याप्त धारणाओं पर पुनर्विचार

विशेषांक के लेखों पर पाठकों की उपर्युक्त टिप्पणियाँ यह भी दर्शाती हैं कि उन्हें इन शैक्षिक मुद्दों के बारे में अपनी पहले से स्थापित पूर्व धारणाओं / मान्यताओं पर पुनर्विचार कर उन्हें बदलने में काफ़ी मदद मिली है।

इसी तरह की पूर्व धारणाएँ अन्य विषयों और प्रक्रियाओं के बारे में भी व्याप्त हैं जिनकी मुश्किलें शिक्षा की बातचीत, लेखन और शिक्षण कार्य में अकसर महसूस की जाती हैं।

विद्यार्थियों का सीखना, हाशियाकृत समुदाय के विद्यार्थी, लड़कियों की शिक्षा, गणित शिक्षण, शारीरिक असमर्थता वाले विद्यार्थी, शिक्षा में समानता, थिएटर इन एजुकेशन, प्रिंट-रिच वातावरण, विद्यार्थियों का साहित्य, आदि कुछ ऐसे ही मसले हैं।

स्थापित धारणाओं के बने रहने से सीखने-सिखाने में कई समस्याएँ सामने आती हैं। इन पर संवाद करना *पाठशाला* की जवाबदेही में शामिल है। पत्रिका के लेखों में कई ऐसे प्रसंग और वृत्तान्त हैं जो विमर्श के ज़रिए इन धारणाओं को शिथिल करने का प्रयास करते हैं। इसे एक उदाहरण से समझ सकते हैं–

> *"अपना अनुभव बताने से पहले यह स्पष्ट करना चाहती हूँ कि किसी भी अवधारणा या पाठ को नाटक के रूप में प्रस्तुत करना 'थिएटर इन एजुकेशन' नहीं है। ऐसा बताना इसलिए अनिवार्य है क्योंकि विद्यालयों की मॉनिटरिंग के दौरान मैंने पाया कि अध्यापक हिन्दी की पाठ्यपुस्तक में दी गई कहानी या कविता और यात्रा वृत्तान्त को नाटक में रूपान्तरित करके पढ़ाते हैं, और कहते हैं कि वे अपनी कक्षा में 'थिएटर इन एजुकेशन' को शिक्षणशास्त्रीय युक्ति के रूप में इस्तेमाल कर रहे हैं। इसी तरह, पर्यावरण की कक्षा में जल चक्र, ऊर्जा व बल को पढ़ाते समय नाटक किया जा रहा था, और कहा यह जा रहा था कि 'थिएटर इन एजुकेशन' को अवधारणाएँ स्पष्ट करने के लिए काम में लाया जा रहा है।*
>
> *मैं यह बताना ज़रूरी समझ रही हूँ कि पढ़ाए जाने वाले पाठ के लिए कक्षा के कुछ विद्यार्थियों को चुनना, उन्हें पाठ से सम्बन्धित संवाद लिखकर देना, संवादों को याद कर कक्षा के बाक़ी विद्यार्थियों के सामने प्रस्तुत कर देना किसी भी सूरत में 'थिएटर इन एजुकेशन' नहीं है।"* सुरभि चावला, लेख 'भाषा की घण्टी और थिएटर इन एजुकेशन', अंक 5

चित्र 2 : *पाठशाला भीतर और बाहर* के सफ़र की कुछ बानगियाँ

पत्रिका को ज़्यादा बेहतर बनाने की कोशिशें

पहले अंक से लेकर 21वें अंक का सफ़र पाठकों से जुड़ाव की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण रहा। इस सफ़र से हासिल अनुभवों और संस्थान व पाठकों की अपेक्षाओं के अनुरूप *पाठशाला* के 22वें अंक से लेखों की प्रकृति, उद्देश्य, स्वरूप, प्रस्तुति और पहुँच में कुछ और बदलाव किए गए। ये बदलाव हमारे पाठक *पाठशाला* अंकों में देख भी रहे हैं, और पसन्द भी कर रहे हैं।

अब पत्रिका का मुख्य फ़ोकस प्रारम्भिक शिक्षा है। पहुँच को विस्तार देने के लिए अब यह तीन भाषाओं में प्रकाशित की जा रही है। सबसे पहले इसे हिन्दी में प्रकाशित कर फिर अँग्रेज़ी और कन्नड़ में अनुवाद करके प्रकाशित किया जा रहा है। इससे एक भाषाई और भौगोलिक क्षेत्र के लेखकों द्वारा हासिल ज्ञान व समझ दूसरे भाषाई और भौगोलिक क्षेत्र के पाठकों तक पहुँच बना रही है। ज्ञान व अनुभवों की इस आवाजाही से संवाद के ज़्यादा विस्तृत व गहन होने की सम्भावना बढ़ी है। बदले स्वरूप में पत्रिका का फ़ोकस और पहुँच का आधार पैन इंडिया, अर्थात् पूरा भारत है। ज़्यादातर पठन सामग्री शिक्षकों और शिक्षक प्रशिक्षकों के अनुभवों पर आधारित होती है। लेख *एनईपी 2020, एनसीएफ़-एफ़एस 2022* और *एनसीएफ़-एसई 2023* में दर्ज विचारों के अनुरूप होते हैं। लगभग पूरी विषयवस्तु कक्षाओं में उसकी उपयोगिता और शिक्षकों के पेशेवर विकास को ध्यान में रखकर चुनी जाती है।

पाठशाला अब बहुरंगी छप रही है। पृष्ठों की संख्या 60 + 4 हो गई है। इसके चलते अब यह खोलने-पढ़ने की दृष्टि से आकर्षक व सहज हुई है। पत्रिका में कुछ नए स्तम्भ, जैसे 'शिक्षकों की डायरी से', 'उम्मीद जगाते शिक्षक', 'इनसे मिलिए', 'आइए, करके देखें' और 'किताबों से दोस्ती' प्रारम्भ किए गए हैं। इन स्तम्भों से *पाठशाला* में शिक्षकों के अनुभव लेखन में इज़ाफ़ा हुआ है।

चुनौतियाँ और इनसे उबरना

शुरुआती दौर से ही *पाठशाला* के सामने कुछ चुनौतियाँ बनी रहीं। एक समस्या थी तमाम प्रयासों के बावजूद पर्याप्त संख्या में गुणवत्तापूर्ण लेखों का प्राप्त न होना। इससे पत्रिका निर्धारित समय से कुछ हफ़्तों की देरी से प्रकाशित होती रही जिससे इसके अंकों को पाठकों तक निर्धारित समय पर पहुँचाना समस्या बनी रही। दूसरी समस्या थी कुछ पाठ्यचर्या क्षेत्रों, जैसे गणित, विज्ञान और सामाजिक अध्ययन पर अच्छी गुणवत्ता वाले लेखों का प्राप्त होना।

पत्रिका अब ज़्यादातर चुनौतियों से उबर चुकी है। *पाठशाला* के सभी संस्करण न सिर्फ़ तय महीनों में प्रकाशित हो रहे हैं, बल्कि सब्सक्राइबर तक पहुँच भी रहे हैं। लेखों की आमद पहले से काफ़ी बढ़ी है। लेखकों व पाठकों की दृष्टि से संख्या और भौगोलिक क्षेत्र में विस्तार हुआ है। इस विस्तार में पत्रिका का तीन भाषाओं में प्रकाशित होना भी शामिल है। इसके चलते न सिर्फ़ पाठकों की संख्या लगातार बढ़ रही है, बल्कि लेख भी हमें देश के कोने-कोने से मिल रहे हैं। जैसे, इसी अंक में देश के 13 राज्यों के शिक्षकों के शिक्षण अनुभव शामिल हुए हैं। जो शिक्षक कक्षा में बेहतर काम कर रहे हैं वे अपने अनुभवों को ठीक ढंग से लिख सकें, इसके लिए उन्हें प्रोत्साहित करने और सहयोग करने के इरादे से लेखन कार्यशालाएँ करने के प्रयास भी हो रहे हैं।

शिक्षकों का पेशेवर विकास और अनुभव लेखन

शिक्षकों के पेशेवर विकास के लिए आयोजित किए जाने वाले सेवारत और सेवाकालीन प्रशिक्षणों में उपयोग की जाने वाली सामग्री में शिक्षकों के 'अनुभव आधारित लेखों' के लिए आमतौर पर कोई जगह नहीं होती है, और न इन्हें शामिल करने की कोई योजनाबद्ध दृष्टि होती है। इस वजह से इन प्रशिक्षणों से प्रशिक्षु शिक्षक जुड़ाव महसूस नहीं करते।

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में भी यह अपेक्षा की गई है कि शिक्षकों के पेशेवर विकास में विकास के हर चरण पर अलग-अलग तरह की विषयवस्तु की ज़रूरत होती है। विषयवस्तु व्यापक, सम्पूर्ण, प्रासंगिक, कक्षा से जुड़ी और शिक्षकों के सामने आने वाली चुनौतियों को सम्बोधित करने वाली होनी चाहिए। शिक्षकों को अपने पेशेवर विकास में तरह-तरह के साधनों के ज़रिए लगातार जुटे रहना चाहिए। उन्हें आपस में सीखने के मंच ज़रूर ही उपलब्ध कराए जाने चाहिए।

पाठशाला का मंच और इसमें प्रकाशित होने वाले अनुभव लेख इन अपेक्षाओं को पूरा करने में अपने हिस्से का योगदान दे रहे हैं। पत्रिका की हमेशा यह कोशिश रहती है कि हमारे ज़्यादा-से-ज़्यादा शिक्षक और सन्दर्भ व्यक्ति अपने समृद्ध अनुभव लगातार लिखते रहें, और *पाठशाला* के ज़रिए इन्हें विशाल जागरूक शिक्षक समुदाय से साझा करें।

पाठशाला में लेख आमंत्रित करने की प्रक्रिया में लेखकों से आग्रह रहता है कि वे लेखों में अपने ठोस अनुभवों को उदाहरण व प्रमाण के साथ विस्तार से प्रस्तुत करें। सम्पादकीय टीम लेखों के चयन के लिए इनका रिव्यू करती है, और इन्हें बेहतर बनाने के लिए लेखकों को सकारात्मक सुझाव भी देती है। शिक्षक स्वयं भी इन्हें बार-बार पढ़कर अपने शिक्षण और लेखन की बारीक़ियों को समझते हैं, और उनमें अपेक्षित बदलाव करते हैं। जब दूसरे शिक्षक इन्हें पढ़ते हैं, वे इनसे सीखते हुए भी अपनी शिक्षण गतिविधियों पर रिफ़्लेक्ट कर रहे होते हैं। इससे एक दूसरे से सीखने, यानी पीयर लर्निंग के मौक़े बन रहे होते हैं।

अनुभव लेखन से शिक्षकों को अपने शिक्षण को देखने का समालोचक नज़रिया मिलता है। वे शिक्षण में आने वाली चुनौतियों तथा समस्याओं को गहराई से समझ रहे होते हैं, और अपने तरीक़ों में सुधार कर उनके समाधान के उपाय खोज पाते हैं। लेखन और शिक्षण के ऐसे ही प्रयासों से होती है चिन्तनशील पेशेवर शिक्षक बनने की शुरुआत। अन्ततः, यह शुरुआत विचारशील इन्सान बनने के रास्ते खोलती है।

गुरबचन सिंह पिछले 50 वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। पिछले 15 सालों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन से जुड़े रहे हैं और पाठशाला भीतर और बाहर के संपादक भी रहे हैं। वर्तमान में वे पाठशाला पत्रिका के सलाहकार हैं।

सम्पर्क : gurbachan.singh@azimpremjifoundation.org